Class:	**B.A. 3rd year**	**Subject:**	**Music (Vocal/Instrumental)**
Course Type:		**Course Code:**	**MUSA307TH**
Course Name:	**Theroy**	**Paper Type:**	**Theory Paper**

MUSIC
(Theory)

Lesson : 1 - 6

Dr. Nirmal Singh

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय सूची	पृ. सं
1		विषय सूची	2
2		प्राक्कथन	3
3		पाठ्यक्रम	4
4	इकाई 1	मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति	5-15
5	इकाई 2	हिमाचल प्रदेश के लोक गीत	16-23
6	इकाई 3	तीन ताल और दादरा ताल	24-33
7	इकाई 4	भैरव राग और यमन राग	34-41
8	इकाई 5	पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल का जीवन परिचय	42-54
9	इकाई 6	नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी	55-67
10		महत्त्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार	68

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA307H में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की सैद्धान्तिक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई । में मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति विषय का परिचय आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में हिमाचल प्रदेश के लोक गीत आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में तीन ताल और दादरा ताल आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में भैरव राग और यमन राग आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल का जीवन परिचय आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी विषय का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

COURSE CODE MUSA307TH
GE-1
B.A.3rd Year Generic Elective
HINDUSTANI MUSIC (Vocal & Instrumental)

6 Lectures /week

Paper Theory	Max Marks	Credits
	100(70+30Assesment)	6

Title- heory of Indian Music and Folk Music of Himachal Pradesh

SECTION-I

1. Folk songs of Himachal Pradesh

2. Knoledge of Folk instruments of Himachal Pradesh
Rannsingha, Nagara, Shehnai, Karnal

2. Biographies of the following Musicians of Himachal Pradesh
Pt. Som Dutt Battu, Hetram Tanwar, Kashmiri Lal

3. Introduction of the following Ragas with illustrations:-
Bhairav, Yaman

4. Introduction of the following Talas with their divisions:-
Teentaal, Dadra

5. Essay on the following Topics:-
1. Music and Culture
2. Impact of Music in Human life.

अध्याय-1
मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति

अध्याय की रूपरेखा

1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य
1.3	मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	संगीत और संस्कृति
1.5	सारांश
1.6	शब्दावली
1.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8	संदर्भ
1.9	अनुशंसित पठन
1.10	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA307 की यह पहली इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति का अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों से ही सुगम संगीत/ लोक संगीत या फिल्मों संगीत आदि की उत्पत्ति होती है जो अनायास ही श्रोताओं के हृदय पर गहरा प्रभाव डालती है। इस जगत मे वैसे भी कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो संगीत के प्रभाव से अछूता रहा हो।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति विषय का परिचय का विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही जान पाएंगे कि संगीत और संस्कृति किस प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं तथा संगीत का प्रभाव मानव जीवन पर कैसे पड़ता है। तंत्री वाद्यों पर रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इन विषयों के अध्ययन के पश्चात संगीत चिकित्सा को समझ पाएंगे और प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संगीत के प्रभाव को जान पाएंगे।

1.2 उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव को जान सकेंगे।
- संगीत और संस्कृति विषय को समझ पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति विषय के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ

सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

1.3 मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव

संगीत का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। संगीत एक ऐसा विषय है जिसका प्रत्येक विषय से गहरा सम्बन्ध है। संगीत प्रकृति के कण-कण में विद्यमान है। संगीत का मनुष्य जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है तथा संगीत मनुष्य के प्रत्येक क्षेत्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है -

(1) बौद्धिक विकास

(2) मानसिक विकास

(3) आध्यात्मिक विकास

(4) शारीरिक विकास

(5) मनोवैज्ञानिक विकास

(6) सामाजिक विकास

(7) चरित्र निर्माण का विकास

(8) सांस्कृतिक विकास

(9) राष्ट्रीय एकता का विकास

(1) बौद्धिक विकास

संगीत हमारी बुद्धि का विकास करता है। संगीत व्यक्ति को प्रत्येक परिस्थितियों में सन्तुलित रखता है और हमारे ध्यान को एकाग्रचित करता है। संगीत एक ऐसी कला है जिसमें बौद्धिक आकलन करने की क्षमता है। कलाकार बौद्धिक स्तर पर ही संगीत की गहराई तक जाता है।

(2) मानसिक विकास

संगीत मनुष्य के मानसिक विकास में सहायक है। बाह्य संवेदना को मन तक पहुँचाने का काम शरीर करता है। इस अर्थ में मन व शरीर दोनों पर प्रभाव पड़ता है परन्तु मन संगीत की ओर जल्दी आकर्षित हो जाता है क्योंकि संगीत में आनन्द देने की शक्ति विद्यमान है। संगीत मन

का स्पर्श जल्दी कर लेता है। इस तरह संगीत मन के भावों की अभिव्यक्ति करने में सहायक है।

(3) आध्यात्मिक विकास

संगीत मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आत्मा की शुद्धि, आत्मदर्शन, आत्मानुभूति का आभास, साधना, चिंतन, मनन और मोक्ष भी आध्यात्म का क्षेत्र हैं। यह सब संगीत द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। संगीत एक ऐसी साधना है जिसमें मन को एकाग्रचित करना होता है तथा परमात्मा अथवा मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। संगीत में वह आध्यात्मिक शक्ति है जो आत्मा की उन्नति के लिए साधन बनती है।

(4) शारीरिक विकास

शारीरिक शिक्षा और संगीत का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि संगीत का प्रभाव पहले हमारे शरीर पर पड़ता है और फिर मन पर पड़ता है। लेकिन हम संगीत का आनन्द तभी उठा सकते हैं जब हमारा शरीर स्वस्थ होगा क्योंकि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है। स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम, कसरत, योगा आदि महत्वपूर्ण होते हैं। स्वस्थ शरीर से ही सोच-विचार, बुद्धि, स्मृति, रूचि सबल होती है।

(5) मनोवैज्ञानिक विकास

मनोविज्ञान और संगीत का गहरा सम्बन्ध है। जब हम संगीत को मनोविज्ञान का सहायक या समकक्ष मानकर अध्ययन करते हैं तब संगीत को मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से समझते हैं या अध्ययन करते हैं। हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान की सहायता या माध्यम द्वारा संगीत का रसास्वादन करते हैं।

(6) सामाजिक विकास

भारतीय संगीत में संगठित करने की अद्भुत शक्ति है। संगीत के एक कदम से राज्य-राज्य में आकर जाति-पाति, ऊँच-नीच के भेदभाव खत्म हो जाते हैं। संगीत कला के प्रवाह से धर्म तथा जाति के अवरोध भी वह जाते हैं। उदाहरण के लिए मैहर के उस्ताद अलाऊद्दीन खां की सपुत्री का हिन्दु घराने के पं० रवि शंकर के साथ प्रणय सूत्र में बंधना एकता का प्रमुख उदाहरण है। संगीत ही एक ऐसा साधन है जो समाज में मानव को मानव के हृदय से जोड़ता है। हम देखते हैं कि धार्मिक उत्सवों, त्योहारों पर अपने मन की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए संगीत का सहारा लिया जाता है।

संगीत सम्राट स्व० पं० मास्टर मनहर बर्वे ने लिखा है-

Music is the only art and greatest powers, which makes the unity of all human costs.

(7) चरित्र निर्माण का विकास

व्यक्ति समाज की सबसे छोटी परन्तु महत्वपूर्ण इकाई है। व्यक्ति समाज के हित में व्यक्तिगत जीवन को संगठित कर सकता है। संगीत प्रत्येक स्थिति में व्यक्ति को प्रसन्न रखने और प्रणय प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण आधार है। संगीत व्यक्ति को निराशा, आत्महीनता आदि दोषों से मुक्ति दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। असफलता की स्थिति में भी विश्वास प्रदान कर व्यक्ति को पुनः दुगने आनन्द व उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है।

(8) सांस्कृतिक विकास

संस्कृति किसी भी देश की अमूल्यनिधि होती है। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन तथा गौरवमयी है। सभी समाजों में संस्कृति के संरक्षण का मुख्य श्रेय संगीत को ही जाता है तथा संस्कृति को सहेजने जा में संगीत का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हिन्दुस्तानी संगीत में अपने व्यवहारिक और उपयोगी स्वरूप के कारण हमारी संस्कृति को हजारों वर्षों से स्थायित्व प्रदान किया हुआ है। उसे अंग्रेजी में "The way of living on Pattern of Living" कहते हैं। देश की संस्कृति उसके संगीत व नृत्य आदि से पहचानी जाती है, जैसे 'भंगड़ा नृत्य' से पता चलता है कि यह पंजाब का लोक नृत्य है।

प्लूटो के अनुसार -"किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता का अनुमान उस देश की संगीत कला की अवस्था से लगाया जा सकता है"।

9) राष्ट्रीय एकता का विकास

प्राचीन काल से विभिन्नताओं को मिलाकर समाज में एकता बनाए रखने के लिए संगीत को एक माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। भिन्न-भिन्न भाषाओं के लोक गीतों व लोक गाथाओं को घूम-घूम कर गाने वाले साधू-संतों और फ़कीरों में पारस्परिक कोई भी भेद नहीं था। युद्ध क्षेत्र में संगीत शक्ति बनकर सैनिकों में ओज़ का संचार करता है और वहीं विध्वंसकारी शक्तियों को चुनौती भी देता है तथा क्षेत्र, जाति, धर्म के आधार पर अलग पहचान बनाए रखने के कुछ लोगों के प्रयासों के विपरीत व्यक्तियों को राष्ट्रीय धारा में समाविष्ट करने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

(1) "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।

हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा"।।

(2) "ए मेरे वतन के लोगो, ज़रा आँख में भर लो पानी" आदि इस प्रकार के गीतों में राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी हुई है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

1.1 "किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता का अनुमान उस देश की संगीत कला की अवस्था से लगाया जा सकता है" ये पंक्तियाँ किसकी है?

1) सुकरात

2) प्लूटो

3) अरिस्टोटल

4) कोई नहीं

1,2 Music is the only art and greatest powers, which makes the unity of all human costs. ये पंक्तियाँ किसकी है?

1) स्व० पं० मास्टर मनहर बर्वे

2) स्व० पं० मास्टर सोहन बर्वे

3) स्व० पं० मास्टर मोहन बर्वे

4) कोई नहीं

1.4 संगीत और संस्कृति

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, गायन, नृत्य, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनायी गयी पद्धतियों का परिणाम होता है।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते हैं 'प्रकृति' (मूल स्थिति), 'संस्कृति' (परिष्कृत स्थिति) और 'विकृति' (अवनति स्थिति)। जब 'प्रकृत' या कच्चा माल परिष्कृत किया जाता है तो यह संस्कृत हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना।

संस्कृति का शब्दार्थ है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति-रिवाज रहन-सहन, आचार-विचार, नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता और संस्कृति का अंग है मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। भारतीय संस्कृति की जीवंत परंपराओं और उनकी संरक्षण में संगीत का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे संगीत में सौंदर्य, धर्म की पवित्रता एवं दर्शन की सार्थकता का विचित्र एवं विपुल संगम है। यही तीनों विशेषताएं भारतीय संस्कृति में भी विद्यमान है। संगीत में धर्म एवं दर्शन की पवित्र शांति उसकी समस्त विधाओं में व्याप्त है। हमारे दैनिक जीवन में वैदिक काल से जन्म, विवाह तथा अन्य संस्कारों के अवसर पर वेद मंत्रों के साथ-साथ संगीत का भी प्रचलन रहा है। समय-

समय पर रामायण, मदभगवदगीता आदि के छंदों एवं गीतों का भी गायन होता रहा है, जिनमें लोक कला, लोक संस्कृति और लोक संगीत के अंतर्गत अतिरिक्त काव्य, धर्म एवं दर्शन का भी योग रहता है। भारतीय संगीत की त्रिवेणी गायन, वादन और नृत्य आदिकाल से ही ईश्वर की सेवा करती आई है जो कि विश्व की अनोखी परंपराओं में से एक है।

संस्कृति इतिहास का दर्पण है मानव जाति की पूर्व परंपराएं, पूर्वजों से चले आ रहे संस्कार, जिसमें प्राचीनता के साथ-साथ मान्यता प्राप्त नवीनताएं भी सम्मिलित होती हैं, संस्कृति कहलाती है। साधारणत संस्कृति में मानव के रहन-सहन, खान-पान, चिंतन-मनन, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों एवं वृत्तियों का समावेश होता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं ही संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति के मूलतत्वों में जीवन-मरण बोध, मानव मात्र में बन्धुत्व, पारिवारिक जीवन, पाप-पुण्य, जन्म-पुनर्जन्म, कर्म-विचारणा, मुक्ति का मार्ग, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, सौंदर्य उपासना, कलात्मक लालित्य संगीत, स्थापत्य, चित्रकला नृत्य और काव्यकला आदि को रखा जा सकता है। यही हमारी संस्कृति के मूलाधार है। यह परंपरागत प्रथाएं संस्कृति के अंतर्गत आती है। सभ्यता के विकास के

साथ-साथ ही विकसित होती हैं और धर्म के आदर्श तथा अध्यात्म के धरातल पर एक हो जाती हैं।

सुप्रसिद्ध दार्शनिक डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार- संगीत किसी भी संस्कृति एवं सभ्यता की आत्मा

है"। सुसंस्कृत व्यक्ति के रूप में संगीत की कुछ दीक्षा लेना परमआवश्यक है। जनसाधारण को यह समझना चाहिए कि संगीत आत्मविकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। हमारा समाज एवं संस्कृति सदैव धर्म प्रधान रही है। हम अपनी संस्कृति के किसी भी पक्ष का अध्ययन करें, उसमें अनेक धर्मों के अंश पाएंगे। इसका प्रभाव भारतीय संगीत पर भी पूरी तरह पड़ा है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति ने अनेक धर्मों के दार्शनिक मतों को स्वीकार करके एक नवीन संस्कृति का निर्माण किया, उसी प्रकार संगीत में भी ऐसी अनेकों नवीन शैलियों का निर्माण हुआ ।

प्राचीन काल से ही संगीत का धर्म के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है वस्तुतः संगीत तथा ईश्वर स्तुति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आरंभ से ही धार्मिक क्रियाकलापों में संगीत (गायन, वादन, नृत्य) का व्यवहार देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति के समान ही संगीत का अध्यात्मिक स्वरूप विश्वभर में सर्वाधिक जटिल, परिष्कृत एवं औपचारिक है। भारतीय

संगीत की उत्कृष्टता ने संगीत की सारगर्भिता एवं उसमें निहित गुणों तथा चिंतन का अनुभव करके ही संगीत को दार्शनिकता तथा आध्यात्मिकता से युक्त माना है हमारी संस्कृति एवं संगीत दोनों संपूर्ण मानव जाति के हृदयपक्ष का विकास करते हैं।

संगीतकला तथा आत्मा एक-दूसरे में प्रतिबिंबित होते हैं, क्योंकि संगीतकला का मुख्य लक्ष्य जन-मनोरंजन ही नहीं भवरंजन करना भी है, जो सांसारिक क्रियाकलापों से दूर परमात्मा से एकाकार कराता है। संगीत को सतोगुणी कला भी कहा जाता है। मानव जीवन के तीन शाश्वत मूल्य "सत्यम, शिवम, सुंदरम संस्कृति एवं धर्म के आधार स्तंभ है। संगीत में भी इन मूल्यों को अंतर्निहित माना गया है, अर्थात यह तीनों तत्व धर्म के अतिरिक्त संगीत के भी आधार हैं। सभी धर्मों का अंतिम लक्ष्य मानव मूल्यों से परे ईश्वर में विलीन होना है। संगीत का ध्येय इसी चरमोत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त करना है। यह निरंतर अभ्यास, गहन साधना, चिंतन तथा प्राचीन संगीत शास्त्रों के अध्ययन से प्राप्त किया जा सकता है।

संस्कृति किसी भी देश की अमूल्य निधि होती है। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन तथा गौरवमयी है। समाज में संस्कृति के संरक्षण का मुख्य श्रेय संगीत को ही जाता है तथा संस्कृति को सहेजने में संगीत का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

प्लूटो के अनुसार - "किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता का अनुमान उस देश की संगीत कला की अवस्था से लगाया जा सकता है"।

हिन्दुस्तानी संगीत अपने व्यवहारिक और उपयोगी स्वरूप के कारण हमारी संस्कृति को हजारों वर्षों से स्थायित्व प्रदान किया हुए है। उसे अंग्रेजी में "The way of living on Pattern of Living" कहते हैं। देश की संस्कृति उसके संगीत व नृत्य आदि से पहचानी जाती है, जैसे 'भंगड़ा नृत्य' से पता चलता है कि यह पंजाब का लोक नृत्य है तथा 'नाटी' हिमाचल प्रदेश का लोक नृत्य है।

1.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत मे मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन विषयों के अध्ययन से संगीत के प्रभाव और संगीत तथा संस्कृति को विस्तार से जानने का मौका मिलता है ।

1.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

1.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

1,1) उत्तर: 2

1,2) उत्तर: 1

1.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

1.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव विषय को विस्तार से लिखिए। संगीत और संस्कृति

प्रश्न 2. संगीत और संस्कृति विषय को विस्तार से लिखिए।

प्रश्न 3. मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति विषय को विस्तार से लिखिए।

इकाई-2
हिमाचल प्रदेश के लोक गीत

इकाई की रूपरेखा

2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य
2.3	हिमाचल प्रदेश के लोक गीतों का अध्ययन
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA307 की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय का परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

लोकगीत आम जनता हृदय के स्वर हैं। मानवीय भावनाओं की संगीतमय अभिव्यक्ति है, जिसमें काव्य का पाठ और संगीत का सम्मिश्रण होता है। यह आज भी बताना सम्भव नहीं हैं कि लोकगीत कितने प्राचीन हैं और किसके द्वारा लिखे गए हैं। हिमाचली लोक गीत पुरूषों अथवा स्त्रियों के समूह में स्त्री द्वारा बालकों द्वारा तथा युगल व वृन्द रूपों में गाये जाते हैं। फिर भी ज़्यादातर लोकगीतों को महिलायें ही गाती हैं। लोकगीतों के सम्बन्ध में यह कहा जाये कि जब-जब ग्रामीण टोली या महिला समूह के मन में जैसी जैसी उमंगे उठी वैसी ही अभिव्यक्ति से लोकगीत बनते चले गये तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय का अर्थ परिभाषा एवं विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही विद्यार्थी एक विषय के अध्ययन से अपनी संस्कृति जो दिन प्रतिदिन अपनी शुद्धता को खो रही है और साथ अपने ऊपर पाश्चात्य संस्कृति का रंग चढ़ा रही है उसको सँजोकर रख सकते हैं। ।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय को जान सकेंगे।
- हिमाचल के सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को जान सकेंगे।
- लुप्त होते रीति-रिवाजों को लुप्त होने से बचाने की कोशिश कर सकेंगे।
- हिमाचल प्रदेश में सांस्कृतिक विविधता मे एकता को समझ सकेंगे।
- अपने स्थानीय क्षेत्र के अलावा अन्य जिलों या स्थानों के लोक संगीत को समझ और जान सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

2.3 हिमाचल प्रदेश के लोक गीत

लोकगीत आम जनता हृदय के स्वर हैं। मानवीय भावनाओं की संगीतमय अभिव्यक्ति है, जिसमें काव्य का पाठ और संगीत का सम्मिश्रण होता है। यह आज भी बताना सम्भव नहीं हैं कि लोकगीत कितने प्राचीन हैं और किसके द्वारा लिखे गए हैं। हिमाचली लोक गीत पुरूषों अथवा स्त्रियों के समूह में स्त्री द्वारा बालकों द्वारा तथा युगल व वृन्द रूपों में गाये जाते हैं। फिर भी ज़्यादातर लोकगीतों को महिलायें ही गाती हैं। लोकगीतों के सम्बन्ध में यह कहा जाये कि जब-जब ग्रामीण टोली या महिला समूह के मन में जैसी जैसी उमंगे उठी वैसी ही अभिव्यक्ति से लोकगीत बनते चले गये तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

हिमाचल प्रदेश के लोक गीत बहुत मधुर और आनंददायक हैं। इन लोक-गीतों का विषय सामान्य जीवन से लेकर इतिहास, धर्म, पुराण आदि सभी से संबंधित हो सकता है। परन्तु प्रायः गाए जाने वाले लोक गीत प्रेम- वीर-गाथाओं, देव-स्तुतियों, ऋतु-प्रभात और सामाजिक बंधनों, सामाजिक उत्सवों आदि से सम्बन्धित हैं। हर्ष और वेदना दोनों की इनमें अनुभूति होती है। ये लोक-गीत एकल, युगल या सामूहिक रूप से गाए जाने वाले हैं। रचयिता कोई गायन विशेषज्ञ नहीं बल्कि ये किन्हीं सरस हृदय से निकली स्वच्छन्द लयात्मक आवाज है। किसी भी उत्सव, त्यौहार या मेले में गाते समय स्थानीय वादय यंत्रों का गायन के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

1. बिहाइयां

हिमाचल प्रदेश में जन्म तथा विवाह सम्बन्धी लोक गीत अति प्रसिद्ध हैं। जन्म, नामकरण, मुण्डन आदि संस्कारों के समय गाए जाने वाले गीतों को बिहाइयां कहते हैं।

2. सुहाग

कन्या के विवाह के समय गाये जाने वाले लोक गीतों के 'सुहाग' कहते हैं।

3. घोड़ी

विवाह की रस्म पूरी होने के बाद विदाई गीत गाये जाते हैं, इन रस्मो को कांगड़ा में घोड़ी कहा जाता है। विवाह सम्बन्धी कुछ अन्य गीतों को 'सेठणियां' भी कहते हैं।

4. कुंजू-चंचलो

हिमाचल में श्रृंगार रस के लोकगीतों का भी विशेष महत्त्व है। कुल्लू और कांगड़ा के प्रेम गीत कुंजू-चंचलो हिमाचल में उसी प्रकार से विख्यात हैं, जिस प्रकार हीर रांझा के प्रेम गीत हैं। ये गीत प्रेम की प्रबल भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

5. झुर्रियाँ गीत

सिरमौर के श्रृंगार रस से भरे झुरी गीत कोमल भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। झूरी पहाड़ी भाषा के झूर शब्द का स्त्रीलिंग है जिसका अर्थ अनुभव करना होता है। वास्तव में 'झुरी गीत विरह गीत होते हैं। मण्डी में "सिराज की दासी" नामक लोकगीत प्रसिद्ध है जो की एक झुरी गीत है।

6. पिंगा दे गीत

सावन के महीने में बिलासपुर में झूलों के गीत गाये जाते हैं तथा घर-घर में झूले डाले जाते हैं। इन झूलों के गीतों, को "पिंगा दे गीत" कहा जाता है।

7. छींजे

छींजे हिमाचल का एक प्रसिद्ध ऋतु गीत है। चैत्रमास में वर्षा के आरम्भ होने पर यह गीत मण्डी के घर-घर में गूंज उठते हैं। छीजे चैत्र संक्रान्ति से लेकर मास के अन्त तक गाये जाते हैं।

हिमाचल के जनजातीय व समतलीय जनजीवन के विसंगतियों में अंकुरित पल्लवित प्रेम की सरस-सरल, मीठी-कड़वी, अनुभूतियों-बिरोधों-अवरो धों को आंचलिक भाषा-रूपों में व्याख्या देते लोकप्रिय परंपरित प्रणय लोकगीतों का सुन्दर दस्तावेज़ हिमाचल के लोकगीत', न केवल संकलन, संपादन है बल्कि लेखक के पर्वतीय जनजीवन के लम्बे और भोगे

यथार्थ का सृजक-मानस में उभरे शब्द व बिम्बों की सरस, सरल मनभावन व्याख्या है जो पाठक को लोकगीतों के प्रसंगों व संदर्भों से जोड़ता रसानुभूति कराता पहाड़ व पहाड़ के जीवन से जोड़ता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

2.1 जन्म, नामकरण, मुण्डन आदि संस्कारों के समय गाए जाने वाले गीतों को क्या कहते हैं।

1) सिठणियाँ

2) झमाकड़ा

3) बिहाइयां

4) कोई नहीं

2.2 कन्या के विवाह के समय गाये जाने वाले लोक गीतों के क्या कहते हैं।

1) सिठणियाँ

2) सुहाग

3) बिहाइयां

4) कोई नहीं

2.3 कुंजू चंचलों लोक गीत कौन से जिले से संबंधित है?

1) कांगड़ा

2) किन्नौर

3) चंबा

4) कोई नहीं

2.4 पिंगा दे गीत कौन से जिले से संबंधित है?

1) बिलासपुर

2) किन्नौर

3) चंबा

4) कोई नहीं

2.5 लड़के के विवाह के समय गाये जाने वाले लोक गीतों के क्या कहते हैं।

1) सिठणियाँ

2) घोड़ी गीत

3) बिहाइयां

4) कोई नहीं

2.4 सारांश

हिमाचल प्रदेश के लोक गीत एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे लोक संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस विषय के अध्ययन से विद्यार्थी को अपनी सांकृतिक धरोहर को समझे और जानने का अवसर मिलेगा और विद्यार्थी अपनी संस्कृति को नजदीक से समझेगा।

2.5 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।

- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं।
- विरह- जुदाई
- पिंग- झुला
- छींज- कुश्ती

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.1) उत्तर: 3

2.2) उत्तर: 2

2.3) उत्तर: 3

2.4) उत्तर: 1

2.5) उत्तर: 2

2.7 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

2.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 2. लोक संगीत का अर्थ एवं परिभाषा सहित हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय पर प्रकाश डालें।

इकाई-3
तीन ताल और दादरा ताल

इकाई की रूपरेखा

3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य
3.3	तीन ताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	दादरा ताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
3.5	सारांश
3.6	शब्दावली
3.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.8	संदर्भ
3.9	अनुशंसित पठन
3.10	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA307 की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, ताल का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। लेकिन राग के साथ अगर ताल न हो तो ऐसे संगीत की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें राग के साथ ताल का भी उतना ही ज्ञान होना चाहिए जितना कि राग का । गायन या वादन का अभ्यास अगर ताल के साथ किया जाए तो ताल मे पकड़ तो आती ही है, साथ ही प्रस्तुति मे भी चार चाँद लग जाते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीन ताल और दादरा ताल विषय का अर्थ परिभाषा और ताल की एकगुण, दुगुण और तीनगुण के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर ताल के साथ अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता परिपक्क्वता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं ताल को समझने और ताल के साथ न्याय करने में समर्थ हो सकेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- ताल का अर्थ समझ सकेंगे।
- विभाग, सम, ताली और खाली का अर्थ समझ सकेंगे।
- तीन ताल का परिचय जान सकेंगे।
- दादरा ताल का परिचय जान सकेंगे।
- तीन ताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।
- दादरा ताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।

- तीन ताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।
- तीन ताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल तीन ताल और दादरा ताल के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

3.3 तीन ताल परिचय

ताल नाम- तीन ताल

मात्राएं- सोलह मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (नौवीं मात्रा पर)

विभाग- चार-चार मात्राओं के चार मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम तथा पाँचवीं और तेरहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली और दूसरी ताली

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत मे ख्याल गायन/वादन विधा के साथ बहुतायत किया जाता है। इस ताल को सभी तालों का राजा भी कहा जाता है।

तीन ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिन्ह	**x**				**2**				**0**				**3**			

तीन ताल (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधि	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधि	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
चिन्ह	x				2				0				3			

तीन ताल (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधिं धिं	धाधा धिं	धिंधा धा	तिंतिं ता	ताधिं धिं	धाधा धिं	धिंधा धा	धिंधिं धा	धातिं तिं	ताता धिं	धिंधा धा	धिंधिं धा	धाधिं धिं	धाधा तिं	तिंता ता	धिंधि धा
चिन्ह	x				2				0				3			

तीन ताल (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धाधिं धिंधा	धिंतिं तिंता	ताधिं धिंधा
चिन्ह	x				2				0				3			

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.1 तीन ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 16

2) 14

3) 10

4) 12

3.2 तीन ताल मे कितने मात्रा विभाग होते हैं?

1) 5

2) 4

3) 6

4) 12

3.3 तीन ताल मे कौन सी मात्रा पर सम है ?

1) 5

2) 8

3) 1

4) 12

3.4 तीन ताल मे सम को मिलाकर कितनी ताली होती हैं?

1) 5

2) 3

3) 5

4) 12

3.5 तीन ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1) 5

2) 1

3) 5

4) 2

3.4 ताल दादरा परिचय

ताल नाम- दादरा ताल

मात्राएं- छः मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (चौथी मात्रा पर)

विभाग- तीन-तीनमात्राओं के दो मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग गीत , गजल, भजन और लोक संगीत मे बहुतायत किया जाता है।

ताल दादरा ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धा	धिं	ना	धा	ति	ना
चिन्ह	x			0		

ताल दादरा (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धाधि	नाधा	तिना	धाधि	नाधा	तिना
चिन्ह	x			0		

ताल दादरा (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धाधिना	धातिना	धाधिना	धातिना	धाधिना	धातिना
चिन्ह	x			0		

ताल दादरा (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धाधिनाधा	तिनाधाधि	नाधातिना	धाधिनाधा	तिनाधाधि	नाधातिना
चिन्ह	x			0		

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.6 दादरा ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 3

2) 5

3) 6

4) कोई नहीं

3.7 दादरा ताल मे कितने मात्रा विभाग हैं?

1) 2

2) 5

3) 6

4) कोई नहीं

3.8 दादरा ताल सम के अलावा कितनी ताली हैं?

1) 2

2) 1

3) 6

4) कोई नहीं

3.9 दादरा ताल मे कितनी खाली हैं?

1) 2

2) 8

3) 6

4) 1

3.10 धा धी ना, धा ति ना किस ताल के बोल हैं ?

1) झपताल

2) एकताल

3) चौताल

4) दादरा

3.5 सारांश

तीन ताल और दादरा ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे ताल अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। ताल मे पकड़ के साथ किसी भी मात्रा से तान या बंदिश उठाकर सम पर विचित्रता पैदा करते हुए आया जाता है।

3.6 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।

- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।
- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

3.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.1) उत्तर: 1

3.2) उत्तर: 2

3.3) उत्तर: 3

3.4) उत्तर: 2

3.5) उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

3.6) उत्तर: 3

3.7) उत्तर: 1

3.8) उत्तर: 2

3.9) उत्तर: 4

3.10) उत्तर: 4

3.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

3.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 3 तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 4. तीनताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 6. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 7. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 8. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं दादरा ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 9. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

प्रश्न 10. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं दादरा ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

इकाई-4
भैरव राग और यमन राग

इकाई की रूपरेखा

4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य
4.3	भैरव राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	यमन राग परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
4.5	सारांश
4.6	शब्दावली
4.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.8	संदर्भ
4.9	अनुशंसित पठन
4.10	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA307 की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में भैरव और यमन राग का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। रागों के वादी सवादी और अनुवादि स्वरों के साथ अगर सही न्याय किया जाए तो राग अनायास ही श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। अल्हैया बिलावल,भैरव और काफी राग भी ऐसे ही मधुर राग है जिनके अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी इन रागों को समझ सकेगा और इनके अभ्यास से अपने क्रियात्मक पक्ष को उच्च स्तर पर निखार सकता है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- भैरव राग का अर्थ समझ सकेंगे।
- यमन राग का अर्थ समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल भैरव और यमन राग के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

4.3 राग भैरव परिचय

राग भैरव

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

वादी- ध

संवादी- रे

स्वर- रे ध कोमल और शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- .....

न्यास- सा रे ध प

समप्राकृतिक राग- कलिंगड़ा

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

पकड़- ग म ध ऽ प, म प ग रे ऽ रे सा

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.1 राग भैरव का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

4.2 राग भैरव का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) रे

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

4.3 राग भैरव की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

4.4 राग भैरव का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) कलिंगड़ा

3) देश

4) कोई नहीं

4.5 राग भैरव का थाट कौन सा है?

1) आसावरी

2) बिलावल

3) भैरव

4) कोई नहीं

4.4 राग यमन परिचय

राग- यमन

थाट- कल्याण

जाति- सम्पूर्ण

वादी- ग

संवादी- नि

स्वर- म́ तीव्र और शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर- .....

न्यास- ग प नि

समय- रात्रि प्रथम पहर

समप्राकृतिक राग- यमन कल्याण

आरोह- ऩि रे ग म́ प म́ ध नि रें सां

अवरोह- सां नि ध प म́ ध प म́ ग रे नि रे सा

पकड़- ग रे ग प म́ ग ग प ध नि ध प

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.6 राग यमन का वादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) प

4) कोई नहीं

4.7 राग यमन का संवादी स्वर कौन सा है ?

1) ग

2) ध

3) नि

4) कोई नहीं

4.8 राग यमन की जाति क्या है?

1) सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

2) सम्पूर्ण- षाड़व

3) षाड़व- सम्पूर्ण

4) कोई नहीं

4.9 राग यमन का समप्राकृतिक राग कौन सा है?

1) भैरव

2) यमन कल्याण

3) देश

4) कोई नहीं

4.10 राग यमन का थाट कौन सा है?

1) कल्याण

2) बिलावल

3) आसावरी

4) कोई नहीं

4.5 सारांश

भैरव और यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे भैरव और यमन राग अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

4.6 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।
- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

4.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

4.1) उत्तर : 2

4.2) उत्तर: 1

4.3) उत्तर: 1

4.4) उत्तर: 2

4.5) उत्तर: 3

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

4.6) उत्तर : 1

4.7) उत्तर: 3

4.8) उत्तर: 1

4.9) उत्तर: 2

4.10) उत्तर: 1

4.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

4.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. भैरव राग का संक्षिप्त परिचय लिखें।

प्रश्न 2. यमन राग का संक्षिप्त परिचय लिखे।

प्रश्न 3 भैरव और यमन राग के संक्षिप्त परिचय लिखें।

इकाई -5
पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल का जीवन परिचय

इकाई की रूपरेखा

5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य
5.3	पंडित सोम दत्त बट्टू जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	श्री हेत राम तंवर जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
5.5	श्री कश्मीरी लाल जीवन परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 3
5.6	सारांश
5.7	शब्दावली
5.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.9	संदर्भ
5.10	अनुशंसित पठन
5.11	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA307 की यह पाँचवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल का जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

संसार की कोई भी विधा/संगीत क्यों न हो, जाब तक उसका इतिहास न जाना जाए, उस संगीत को जड़ से जानना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार संगीत की बारीकियों को समझने के लिए संगीत से जुड़े उन महान संगीतज्ञों के बारे मे अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व संगीत के लिए न्योछावर कर दिया। उन महान संगीत गुनीजनों के जीवन का गूढ़ता से अध्ययन किया जाता है और उनके समय मे संगीत की स्थिति का और उनके द्वारा किए गए संगीत के उत्थान का अध्ययन किया जाता है। इन गुनीजनों के द्वारा रचित रचनाओं लेखों और रचनाओं के अध्ययन से संगीत विषय मे निपुणता प्राप्त की जा सकती है। उन्हीं महान संगीतज्ञों मे से पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल भी हैं। इनके जीवन का अध्ययन किसी भी लोक संगीत प्रेमी के लिए बहुत आवश्यक है। इनके जीवन परिचय से, इनके संगीत के प्रति समर्पण से कोई भी प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता अर्थात अनायास कि प्रेरित हो जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल के जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे और इनके द्वारा सांगीतिक योगदान का अध्ययन कर प्रेरणा पा सकते हैं।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- पंडित सोमदत्त बट्टु के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- पंडित सोमदत्त बट्टु के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- पंडित सोमदत्त बट्टु के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- पंडित सोमदत्त बट्टु के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

- श्री हेतराम तंवर के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- श्री हेतराम तंवर के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- श्री हेतराम तंवर के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- श्री हेतराम तंवर के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।
- श्री कश्मीरी लाल के सांगीतिक यात्रा को जान पाएंगे ।
- श्री कश्मीरी लाल के संगीत के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और जनून को जान पाएंगे।
- श्री कश्मीरी लाल के सांगीतिक योगदान को जान पाएंगे।
- श्री कश्मीरी लाल के सांगीतिक योगदान के साथ साथ इनके शिष्यों और इनकी उपलब्धियों को जान पाएंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल के जीवन परिचय का अध्ययन कर परएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन और सांगीतिक यात्रा मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

5.3 पंडित सोम दत्त बट्टू

सन 11 अप्रैल 1938 को संगीतकारों के परिवार में जन्मे, पंडित सोम दत्त बट्टू बचपन से ही अपने पिता पंडित राम लाल बट्टू, श्याम चौरासी घराने के अनुयायी, हिंदुस्तानी गायन संगीत के लिए पहल कर चुके थे। उन्होंने प्रसिद्ध पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी के शिष्य पंडित कुंज लाल शर्मा से संगीत में आगे का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने पंडित कुंदन लाल शर्मा से जो उस्ताद आशिक अली खान के एक प्रसिद्ध शिष्य थे, से पटियाला घराने की गायकी की तकनीक भी सीखी। इस प्रकार पंडित सोमदत्त बट्टू पटियाला स्कूल ऑफ म्यूजिक (घराना) के प्रत्यक्ष वंशज हैं। आप अपने गायकी के मानदंडों का पालन करने के अलावा, पटियाला घराने के महान परास्नातक के वंश के गौरवशाली अनुयायी है।

40 वर्षों तक शिमला के विभिन्न कॉलेजों / विश्वविद्यालयों में संगीत के प्राध्यापक रहे। आपके शिष्यों की एक लंबी सूची है, जो विभिन्न विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों में एक उच्च पद पर आसीन है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारत सरकार के तत्वावधान में कई देशों का दौरा कर चुके हैं। आपने संगीत के समारोहों के लिए केन्या, नाइजीरिया, यू.के., यू.एस.ए., त्रिनिदाद और टोबैगो और पाकिस्तान आदि देशों का दौरा किया है। आपने पाकिस्तानी गायिका अबिदा परवीन के साथ शिमला में आयोजित SARC समारोह में भी भाग लिया है। आपको विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के एक उत्कृष्ट कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। आपने देश के विभिन्न संगीत सम्मेलनों में राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में भी प्रदर्शन किया गया जैसे हरि बल्लभ संगीत सम्मेलन, स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन, साहित्य कला परिषद, दिल्ली, पंजाब कला भवन, चंडीगढ़, संगीत नाटक अकादमी, विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक विभाग, अंतर-राज्य सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडल के अलावा रेडियो और टी.वी.आदि पंडित बट्टू को हमारे देश के सर्वोच्च गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष प्रदर्शन करने का सौभाग्य मिला जिनमें प्रमुख हैं-

1. मई, 1958 में डॉ राजेंद्र प्रसाद जी।

2. 22 नवंबर 1962 को पंडित जवाहर लाल नेहरू

3. श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री।

4. डॉ संजीव रेड्डी भारत के राष्ट्रपति ।

5. श्री ज्ञानी जैल सिंह भारत के राष्ट्रपति ।

6. श्री राजीव गांधी भारत के प्रधान मंत्री।

आपको संगीत के क्षेत्र में दिए गए अतुलनीय योगदान के लिए अनेकों पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है जिनमें हिमाचल सरकार द्वारा 'हिमाचल गौरव', पंजाबी अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा 'परम सभ्याचार सम्मान', पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा 'सरदार सोहन सिंह सम्मान', पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा 'भाई मरदाना संगीत सम्मेलन पुरस्कार, भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा 'सप्तक सम्मान' व पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला

द्वारा पंजाब संगीत रत्न सम्मान प्रमुख है। वर्तमान में पंडित बट्टू शिमला में निवास करते हैं और समय-समय पर अपनें कार्यकम प्रस्तुत करते रहते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.1 पंडित सोम दत्त बट्टू का जन्म कब हुआ?

1) 11 अप्रैल 1939

2) 11 अप्रैल 1938

3) 11 अप्रैल 1945

4) कोई नहीं

5.2 पंडित सोम दत्त बट्टू के पिता का नाम क्या था?

1) पंडित राम लाल बट्टू

2) पंडित कृष्ण लाल बट्टु

3) मदन मोहन बट्टु

4) कोई नहीं

5.3 इनमे से किनके समक्ष पंडित सोम दत्त बट्टु को अपनी काल प्रदर्शन का मौका मिला?

1) 1. मई, 1958 में जवाहरलाल नेहरू जी।

2) 1. मई, 1968 में पड़ित भीमसेन जोशी जी।

3) 1. मई, 1958 में डॉ राजेंद्र प्रसाद जी।

4) कोई नहीं

5.4 हिमाचल सरकार द्वारा पंडित सोम दत्त बट्टु को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

1) हिमाचल गौरव

2) हिमाचल रत्न

3) हिमाचली गायक

4) कोई नहीं

5.5 पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा पंडित सोम दत्त बट्टु को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

1) 'सरदार मोहन सिंह सम्मान

2) सरदार सोहन सिंह सम्मान

3) पंजाब रत्न

4) कोई नहीं

5.6 भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा द्वारा पंडित सोम दत्त बट्टु को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

1) सप्तक सम्मान

2) नाद सम्मान

3) संगीत गौरव

4) कोई नहीं

5.4 श्री हेत राम तंवर

श्री हेत राम तंवर का जन्म 1932 में हिमाचल प्रदेश के कुनिहार में पारंपरिक संगीतकारों के परिवार में हुआ था। उनके पिता गुडू राम द्वारा क्षेत्र के संगीत में उनकी शुरुआत की गई थी, और उन्होंने बाद में अपने चाचा लच्छी राम से हल्का संगीत सीखा। हालांकि उन्होंने पारंपरिक गीतों को प्रस्तुत करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए मुख्य रूप से इस क्षेत्र की स्वदेशी शैली में प्रदर्शन किया है। श्री तंवर के प्रदर्शन को उनके गृह राज्य में बहुत सराहा गया है। उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो, शिमला में कई वर्षों तक गाया है, और इसके अलावा हिमाचल प्रदेश में त्योहारों पर नियमित रूप से प्रदर्शन किया है। उन्होंने अब खुद को हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत के संरक्षण और प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है, और उस अंत तक बड़ी संख्या में युवाओं को प्रशिक्षण दिया है। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने उनके जीवन और हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में योगदान पर एक वृत्तचित्र फिल्म का निर्माण किया है। अन्य सम्मानों में, श्री तंवर को संगीत के

क्षेत्र में उनके काम के लिए हिमाचल प्रदेश अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेज का पुरस्कार मिला है। श्री हेत राम तंवर को हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में उनके योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.7 श्री हेत राम तंवर का जन्म कब हुआ ?

1) 1935

2) 1932

3) 1960

4) 1955

5.8 श्री हेत राम तंवर का जन्म हिमाचल प्रदेश के कौन से जिले मे हुआ?

1) कांगड़ा

2) चंबा

3) सोलन

4) कोई नहीं

5.9 श्री हेत राम तंवर का जन्म सोलन जिले के किस गाँव मे हुआ?

1) अर्की

2) बथालग

3) शालाघाट

4) कुनिहार

5.10 श्री हेतरं तंवर को इनमे से कौन सा पुरस्कार मिला है?

1) भरत रत्न

2) हिंचाल गौरव

3) संगीत नाटक अकादमी

4) कोई नहीं

5.5 कश्मीरी लाल

श्री कश्मीरी लाल का जन्म 1 अक्टूबर, सन् 1956 में ग्राम कोटला, तहसील व ज़िला सोलन हि.प्र. में हुआ। आपके पिता श्री नारायणू व माता श्रीमती कलावती के सानिध्य में रह कर सर्वप्रथम आपको संगीत सीखने की प्रेरणा मिली। आपके पिताजी श्री नारायणू सन् 1950 में परिवार सहित गांव कोटला (सोलन) रहने के लिए आए। श्री कश्मीरी लाल जी, पंजाब घराने की विधिवत शिक्षा को गुरू-शिष्य परम्परा द्वारा आज अनेकों शिष्यों में बांट रहे हैं। कश्मीरी लाल जी की यह शिक्षण पद्धति लगभग 25 सालों से प्रदेश में चल रही है। आपने संगीत जगत में जहां विशेषतः हिमाचल प्रदेश में पंजाब घराने का प्रचार-प्रसार किया है, वहीं अपनी रची हुई हज़ारों बंदिशों से घराने का विकास भी किया है। आपके दिये गए शिक्षण से अनेकों शिष्यों ने देशभर में अपनी कला का लोहा मनवाया है। तबला जगत में आज श्री कश्मीरी लाल का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

सन् 1992 से आप 'ऑल इंडिया रेडियो' से तबला वादन में 'बी-हाई' हैं। प्रतिभा के धनी होने के कारण आपको आकाशवाणी-दूरदर्शन केंद्रों द्वारा अनेकों बार स्वतंत्र वादन एवं तबला संगत के लिए बुलाया गया है। आपने संगीत जगत के अनेक विद्वानों के साथ अपना वादन प्रस्तुत किया है, जिनमें अहम्मद-मुहम्मद हुसैन, डॉ. रोशन भारती, माधुरी दण्डके, पं० भीम सेन शर्मा, पं० सतीश शर्मा, पं० हरविंदर शर्मा आदि कलाकार शामिल हैं। शिमला के प्रसिद्ध 'गेयटी थियेटर' में आपने अनेकों बार अंर्तराष्ट्रीय राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों के साथ वादन प्रस्तुत किया है। हिमाचल ही नहीं, बाहरी राज्यों में भी वादन के लिए आपको सदैव बुलाया जाता रहा है। आपने देशभर में अपना तबला वादन प्रस्तुत किया है। आपके सांगीतिक योगदानों को देखते हुए आपको अनेकों बार सम्मानित किया गया हैः

1. सन् 2008, राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत सम्मेलन, संकल्प संस्था शाखा फैज़ाबाद (उतरप्रदेश) द्वारा सम्मानित किया गया है।

2.चन्ना अकादमी संगीत संस्था और मशहूर गायिका पीनाज़ मसानी द्वारा

3. सन् 2009, संकल्प संस्था शाखा रायपुर (छतीसगढ़) द्वारा संगत वादन के लिए सम्मान।

4. माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा अनेकों बार 'कला-सम्मान' प्राप्त । इसके अलावा आपको अनेकों बार राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में निर्णायक के तौर पर बुलाया जाता रहा है। आपको संगीत व अन्य विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकों बार सम्मानित किया गया है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.11 कश्मीरी लाल का जन्म कब हुआ ?

1) 1935

2) 1932

3) 1956

4) 1955

5.12 कश्मीरी लाल का जन्म हिमाचल प्रदेश के कौन से जिले मे हुआ?

1) कांगड़ा

2) चंबा

3) सोलन

4) कोई नहीं

5.13 कश्मीरी लाल का जन्म सोलन जिले के किस गाँव मे हुआ?

1) अर्की

2) बथालग

3) शालाघाट

4) कोटला

5.14 कश्मीरी लाल को संकल्प संस्था शाखा रायपुर (छतीसगढ़) द्वारा संगत वादन के लिए सम्मान कब प्रदान किया गया?

1) 2009

2) 2010

3) 2011

4) कोई नहीं

5.6 सारांश

पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतराम तंवर और श्री कश्मीरी लाल हिमाचली लोक संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके जीवन परिचय के अध्ययन से इनके द्वारा रचित रचनाओं और कृतियों को समझने और जानने का अवसर मिलता है, जो किसी भी संगीत रसिक के सांगीतिक जीवन के लिए सोने पर सुहागे वाली बात हो जाती है। इनके जीवन परिचय के अध्ययन लोक संगीत के क्रियात्मक और रचनात्मक पक्ष मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं।

5.7 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।

- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

5.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

5.1) उत्तर: 2

5.2) उत्तर: 1

5.3) उतर: 3

5.4) उत्तर: 1

5.5) उत्तर: 2

5.6) उत्तर: 1

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

5.7) उत्तर: 2

5.8) उत्तर: 3

5.9) उत्तर: 4

5.10) उत्तर: 3

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

5.11) उत्तर: 3

5.12) उत्तर: 3

5.13) उत्तर: 4

5.14) उत्तर: 1

5.9 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

5.10 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.11 पाठगत प्रश्न

पंडित सोमदत्त बट्टु

प्रश्न 1. पंडित सोमदत्त बट्टु, का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. पंडित सोमदत्त बट्टु का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. पंडित सोमदत्त बट्टु का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4. पंडित सोमदत्त बट्टु द्वारा रचित रचनाओं का विस्तार सहित वर्णन करें।

श्री हेतराम तंवर

प्रश्न 1. श्री हेतराम तंवर का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. श्री हेतराम तंवर का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3 श्री हेतराम तंवर का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4. श्री हेतराम तंवर द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

श्री कश्मीरी लाल

प्रश्न 1. श्री कश्मीरी लाल का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. श्री कश्मीरी लाल का संक्षिप्त जीवन परिचय और इनके सांगीतिक योगदान पर विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3 श्री कश्मीरी लाल का जीवन परिचय और इनकी सांगीतिक उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डालें।

प्रश्न 4. श्री कश्मीरी लाल द्वारा रचित रचनाओं एवं कृतियों का विस्तार सहित वर्णन करें।

इकाई -6
नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी

इकाई की रूपरेखा

6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य
6.3	नगाड़ा वाद्य यंत्र का परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	रणसिंगा वाद्य यंत्र का परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
6.5	करनाल वाद्य यंत्र का परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 3
6.6	शहनाई वाद्य यंत्र का परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 4
6.7	सारांश
6.8	शब्दावली
6.9	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.10	संदर्भ
6.11	अनुशंसित पठन
6.12	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA307 की यह छठी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी विषय का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

संसार की कोई भी वाद्य/विधा/संगीत क्यों न हो, जाब तक उसका इतिहास न जाना जाए, उस संगीत को जड़ से जानना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार संगीत की बारीकियों को समझने के लिए संगीत से जुड़े उन वाद्य यंत्रों के बारे मे अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, और वाद्य यंत्र मे हुए निरंतर समय के साथ परिवर्तन को समझने और जानने के लिए उन वाद्य यंत्रों का अध्ययन किया जाता है। उन्हीं वाद्य यंत्रों मे नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्र हैं। इन वाद्य यंत्रों का का अध्ययन किसी भी लोक संगीत प्रेमी के लिए बहुत आवश्यक है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी विषय का विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे । साथ ही वाद्य यंत्रों के बदलते प्रतिमान को समझ सकते हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- नगाड़ा वाद्य यंत्र का अर्थ समझ सकेंगे।
- नगाड़ा वाद्य यंत्र का इतिहास समझ सकेंगे।
- नगाड़ा वाद्य यंत्र मे निरंतर बदलाव को समझ सकेंगे।
- नगाड़ा वाद्य के अंगों को समझ सकेंगे।
- रणसिंगा वाद्य यंत्र का अर्थ समझ सकेंगे।
- रणसिंगा वाद्य यंत्र का इतिहास समझ सकेंगे।
- रणसिंगा वाद्य यंत्र मे निरंतर बदलाव को समझ सकेंगे।

- रणसिंगा वाद्य के अंगों को समझ सकेंगे।
- करनाल वाद्य यंत्र का अर्थ समझ सकेंगे।
- करनाल वाद्य यंत्र का इतिहास समझ सकेंगे।
- करनाल वाद्य यंत्र मे निरंतर बदलाव को समझ सकेंगे।
- करनाल वाद्य के अंगों को समझ सकेंगे।
- शहनाई वाद्य यंत्र का अर्थ समझ सकेंगे।
- शहनाई वाद्य यंत्रे का इतिहास समझ सकेंगे।
- शहनाई वाद्य यंत्र मे निरंतर बदलाव को समझ सकेंगे।
- शहनाई वाद्य के अंगों को समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी विषय के का अध्ययन कर परएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन और सांगीतिक यात्रा मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

6.3 नगाड़ा

नगाड़ा वाद्य हिमाचल के लोक वाद्यों में विशेषकर अवनद्ध वाद्यों में प्रमख वाद्य है। यदि इसे अवनद्ध वाद्यों का मुखिया भी कहा जाये तो शायद अनुचित न होगा। वैसे तो सभी वाद्यों का आना ही एक विशेष महत्व है, लेकिन वास्तव में नगाड़ा वाद्य ही यहां वृंद-वादन का संचालन एवं प्रतिनिधित्व करता है, चाहे नौबत, या नौपद, गंज, विवाह की यात्रा या अन्य कोई मांगलिक अवसर हैं नगाड़ा वाद्य को शिमला जिला के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नाम से जाना जाता है जैसे टुणुपुणु, नगारा, नगारटु आदि नामों से जाना जाता है। इस वाद्य का वादन प्रत्येक मांगलिक कार्य में होता है। यह वाद्य पूरे प्रदेश में ही नहीं बल्कि भारत में अनेक स्थानों पर थोड़े-थोड़े परिवर्तित रूप में और परिवर्तित नाम से प्रचलित है। यह लोहे आदि धातु से निर्मित एक कटोरानुमा वाद्य है जिस पर चमढ़ा मढ़ा जाता है पृष्ठ भाग की ओर यह शंकु

आकार का सा होता है। नगाड़ा वाद्य अवनद्ध वाद्य श्रेणी का एक प्राचीन वाद्य है और अनेक ग्रंथों में इसका प्रमाण भी मिलता है। नगाड़ा दुंदुभि श्रेणी का ही एक वाद्य है और दुंदभि का उल्लेख ऋग्वेद में भी हमें प्राप्त होता है। वैदिक काल से ही अवनन्द वाद्यों में दुंदुभि तथा भूदुंदुभि जैसे चर्म वाद्यों का अधिक प्रचलन था।

लालमणि मिश्र ने भी नगाड़ा वाद्य को दुंदुभि श्रेणी में ही रखा है, उनके अनुसार "दुंदुभि नगाड़ा, धौंसा, निसान, तम्बकी, दमामा आदि एक ही जाति के वाद्य है। इनमें कुछ के नाम उसके आकार से थोड़ा बहुत अन्तर पड़ने के कारण पड़े है तथा कुछ नाम मुस्लिम प्रभाव से आये। भक्त कवियों तथा संगीत रत्नाकर के बाद दुंदुभि को ही नगाड़ा भी कहा जाने लगा था जिसमें की दो नग होते थे।

शिमला जिला के हर क्षेत्र में नगाड़ा वाद्य का प्रयोग प्रथम वाद्य के रूप में होता है। यह वाद्य अधिकतर देव मन्दिरों में ही रखा जाता है और सर्वप्रथम इसकी ही पूजा होती है। प्रायः दोनों नगाड़ों को एक ही वादक बजाता है लेकिन कहीं-कहीं दो वादक नगाडे को एक-एक करके बजाते है। 'ऊपरी महास' क्षेत्र में कई स्थानों पर नगाड़ों के जोड़े की बजाए जाते है तथा दोनों से अलग-अलग ध्वनि निकलती है।

6.4 रणसिंगा

रणसिंगा हिमाचल प्रदेश के सुषिर वाद्यों के रूप में आता है। रणसिंगा का आकार अंग्रेजी के अक्षर की भांति होता है। यह वाद्य हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी जिलों में देखा जाता है। भारत वर्ष में लगभग सभी राज्यों में इसका प्रचलन है। तथा इसे प्रत्येक राज्य में विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। रणसिंगा कोई नवीन वाद्य नहीं है बल्कि प्राचीन काल से इसका प्रयोग शंख की भांति रण क्षेत्र में किया जाता था। इसका भयंकर नाद शत्रुओं की सेना में डर उत्पन्न करता था। युद्ध का प्रारंभ होने का संकेत रणसिंगा वादन द्वारा भी किया जाता था। राजाओं के राज्य में विभिन्न सुअवसरों पर इसका वादन होता था। मंदिरों में आरती, पूजा के समय इसका प्रयोग किया जाता था जो आज भी प्रचलित है। इससे मिलता जुलता वाद्य गुजरात का 'नागफनी' है जिसका पिछला भाग नाग की तरह तथा आगे का खुला मुंह का भाग "नागफनी की तरह होता है। रणसिंगे का पिछला भाग दक्षिण भारत में पाये जाने वाले वाद्य 'कोम्बू' की भांति होता है।

रणसिंगा वादन सभी मांगलिक कार्यों पर होता है चाहे वो विवाह अवसर हो कोई अन्य मंगल संस्कार हो या कोई देव यात्रा या मेला, पर्व इत्यादि। यह वाद्य लोकगीतों, नृत्यों व नाट्यों में भी सम्मिलित है। वादन की वही सब इसका प्रयोग होता है। विवाह के अनेक चरणों में इसका वादन होता है जैसे- वर यात्रा, तेल, तोरन, शान्तिपूजन, टीका आदि चरण होते है। रणसिंगा वाद्य की आवाज सुनकर दूर-दूर गांव के लोक मांगलिक कार्यों पर इकट्ठे हो जाते है अर्थात रणसिंगा वाद्य का यह संकेतात्मक वादन भी प्रचलित है।

हिमाचल के वाद्य यंत्र यहां की लोक धड़कन हैं। इनका स्वर ताल फूटते ही लोकमन आह्लाद से भर उठता है। पहाड़ के निवासियों का कोई भी मंगल कार्य, पर्व, मेला अथवा त्यौहार इन वाद्यों के बिना अधूरा होता है। आज धीरे-धीरे पश्चिमी सभ्यता बेशक अपना संगीत की छाप तेज़ी से बढ़ाने में कामयाब हो रही हो लेकिन परम्परागत लोकवाद्यों की पहाड़ी जनजीवन में इतनी गहरी पैठ है कि इनका महत्व किसी भी दृष्टि से कम होने की कोई सम्भावना नहीं है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.1 जो वाद्य चमड़े से मढ़े गए होते हैं और जिनका प्रयोग ताल देने के लिए किया जाता है वे वाद्य कहलाते हैं –

1) घन वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) अवनद्ध वाद्य

4) कोई नहीं

6.2 नगाड़ा वाद्य कौन से वाद्यों की श्रेणी मे आता है?

1) अवनद्ध वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) घन वाद्य

4) कोई नहीं

6.3 नगाड़ा वाद्य हिमाचल मे अन्य किन नामों से जाना जाता है?

1) नगारटु

2) सुषिर वाद्य

3) दमामी

4) कोई नहीं

6.4 नगाड़ा वाद्य हिमाचल मे अन्य किन नामों से जाना जाता है?

1) नगरोआ

2) टुणुपुणु

3) सुषिर वाद्य

4) कोई नहीं

6.5 करनाल

करनाल वाद्य हिमाचल प्रदेश का एक सुषिर वाद्य है करनाल शब्द दो शब्दों के संयोग से मिलकर बना है करनाल। कर का अर्थ है हाथ और नाल का अर्थ है खोखली धातु का टुकड़ा। इस वाद्य के वादन के लिए हाथों की पकड़ का महत्वपूर्ण स्थान है। हाथों में उठाकर ही इस वाद्य का वादन किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश के लोक वाद्यों में 'करनाल' बहुत ही प्राचीन वाद्य है। इस वाद्य के बारे में लिखा हुआ बहुत कम मिलता है। लेकिन अनेक मंदिरों में यह वाद्य हमें मिलता है। करनाल वाद्य का आधुनिक रूप तो धातुओं के अविष्कार के बाद ही हमें प्राप्त हुआ है। धातु के अविष्कार के पहले, बहुत समय तक हमें हड्डियों से निर्मित सुषिर वाद्यों का उल्लेख मिलता है। इन वाद्यों में श्रृंग तथा किंगलिंग वाद्य आते हैं। इन वाद्यों का अध्ययन किया जाए तो यही वाद्य करनाल वाद्य के पूर्वज रहे होंगे।

हिमाचल के वाद्य यंत्र यहां की लोक धड़कन हैं। इनका स्वर ताल फूटते ही लोकमन आह्लाद से भर उठता है। पहाड़ के निवासियों का कोई भी मंगल कार्य, पर्व, मेला अथवा त्यौहार इन वाद्यों के बिना अधूरा होता है। आज धीरे-धीरे पश्चिमी सभ्यता बेशक अपना संगीत की छाप तेज़ी से बढ़ाने में कामयाब हो रही हो लेकिन परम्परागत लोकवाद्यों की पहाड़ी जनजीवन में इतनी गहरी पैठ है कि इनका महत्व किसी भी दृष्टि से कम होने की कोई सम्भावना नहीं है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.5 हवा से बजने वाले वाद्य या फूँक से बजने वाले वाद्य क्या कहलाते हैं?

1) घन वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) अवनद्ध वाद्य

4) कोई नहीं

6.6 करनाल वाद्य कौन से वाद्यों की श्रेणी मे आता है?

1) अवनद्ध वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) घन वाद्य

4) कोई नहीं

6.6 शहनाई

शहनाई सुषिर वाद्यों में सबसे प्रमुख वाद्य है। इसे सुषिर वाद्यों का राजा भी कहा जाता है। कुछ लोगों का मत है कि शहनाई ईरानी वाद्य है। उनका कहना है कि इसका वास्तविक नाम शाहनेय है। नेय अर्थात् फूंक से बजने वाला बाजा, शाह अर्थात बादशाह। तात्पर्य यह है कि शहनाई फूंक से बजने वाले समस्त वाद्यों का बादशाह है।

हिमाचल प्रदश में शहनाई एक लोक वाद्य के रूप में बहुत प्रचलित है तथा इसे शहनाई, सनाई, तूरी, पिंपणी, नफीरी, पीपी आदि अनेक नामों से जाना जाता है। मांगलिक अवसरों पर इसका वादन खूब होता है।

शहनाई वाद्य का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में भी बहुत प्रचलित है। दक्षिणी भारत में कर्नाटक संगीत में नागस्वरम् शहनाई वाद्य का ही एक बड़ा रूप है। अनेक आकार व अनेक नाम होने के बावजूद भी मध्यम आकार युक्त यह वाद्य शहनाई नाम से बहुत प्रचलित है। "संगीत विशारद के अनुसार "नफीरी को। सहनाई या सुन्दरी भी कहते है। इसका शुद्ध नाम शहनाई है। शहनाई वाद्य एक प्राचीन वाद्य है और अनेक पुस्तकों में इस वाद्य यंत्र का वर्णन हमें प्राप्त भी होता है। शिमला क्षेत्र में इसे 'तुरही' कहते है। इसे बजाने वाले वादको को 'हेसी या 'तुरी' कहते है। जो परम्परानुसार कुशल वादक

होते है। शिमला जिला में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर शहनाई न बजे। 'नाटी' लोक-नृत्य तो शहनाई के बिना बिल्कुल ही अपूर्ण रह जाता है। चंद्रावली नृत्य, करियाला आदि नाट्यों में भी शहनाई वारा का प्रयोग होता है।

हिमाचल के वाद्य यंत्र यहां की लोक धड़कन हैं। इनका स्वर ताल फूटते ही लोकमन आह्लाद से भर उठता है। पहाड़ के निवासियों का कोई भी मंगल कार्य, पर्व, मेला अथवा त्यौहार इन वाद्यों के बिना अधूरा होता है। आज धीरे-धीरे पश्चिमी सभ्यता बेशक अपना संगीत की छाप तेज़ी से बढ़ाने में कामयाब हो रही हो लेकिन परम्परागत लोकवाद्यों की पहाड़ी जनजीवन में इतनी गहरी पैठ है कि इनका महत्व किसी भी दृष्टि से कम होने की कोई सम्भावना नहीं है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.7 हवा से बजने वाले वाद्य या फूँक से बजने वाले वाद्य क्या कहलाते हैं?

1) घन वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) अवनद्ध वाद्य

4) कोई नहीं

6.8 शहनाई वाद्य कौन से वाद्यों की श्रेणी मे आता है?

1) अवनद्ध वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) घन वाद्य

4) कोई नहीं

6.9 शहनाई वाद्य को शिमला मे और किस नाम से जाना जाता है?

1) अवनद्ध वाद्य

2) सुषिर वाद्य

3) घन वाद्य

4) तुरही

6.10 शहनाई बजाने वालों को किस नाम से जाना जाता है?

1) हेसी या तुरी

2) वादक

3) कोली

4) कोई नहीं

6.11 शहनाई को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

1) गज

2) नफीरी

3) ढोलरू

4) कोई नहीं

6.7 सारांश

नगाड़ा, रणसिंगा, करनाल और शहनाई वाद्य यंत्रों की जानकारी विषय हिमाचली लोक संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन वाद्य यंत्रों के परिचय के अध्ययन से इनके द्वारा वाद्य के स्वभाव को समझने और जानने का अवसर मिलता है, जो किसी भी संगीत रसिक के सांगीतिक जीवन के लिए सोने पर सुहागे वाली बात हो जाती है।

6.8 शब्दावली

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।

- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- सुषिर- फूंक अथवा हवा वाले
- मांगलिक - शुभ

6.9 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

6.1) उत्तर: 3

6.2) उत्तर: 1

6.3) उतर: 1

6.4) उत्तर: 2

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

6.5) उत्तर: 2

6.6) उत्तर: 2

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

6.7) उत्तर: 2

6.8) उत्तर: 2

6.9) उत्तर: 4

6.10) उत्तर: 1

6.11) उत्तर: 2

6.10 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

6.11 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.12 पाठगत प्रश्न

नगाड़ा

प्रश्न 1 नगाड़ा वाद्य यंत्र का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. नगाड़ा वाद्य यंत्र के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 3 नगाड़ा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 4. नगाड़ा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का वर्णन करें।

प्रश्न 5 नगाड़ा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का सचित्र वर्णन करें।

रणसिंगा

प्रश्न 1 रणसिंगा वाद्य यंत्र का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. रणसिंगा वाद्य यंत्र के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 3 रणसिंगा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 4. रणसिंगा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का वर्णन करें।

प्रश्न 5 रणसिंगा वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का सचित्र वर्णन करें।

करनाल

प्रश्न 1 करनाल वाद्य यंत्र का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. करनाल वाद्य यंत्र के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 3 करनाल वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 4. करनाल वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का वर्णन करें।

प्रश्न 5 करनाल वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का सचित्र वर्णन करें।

शहनाई

प्रश्न 1 शहनाई वाद्य यंत्र का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. शहनाई वाद्य यंत्र के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 3 शहनाई वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 4. शहनाई वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का वर्णन करें।

प्रश्न 5 शहनाई वाद्य यंत्र की उत्पत्ति विकास और इसके अंगों का सचित्र वर्णन करें।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न कार्यभार

प्रश्न 1. मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव तथा संगीत और संस्कृति विषय को विस्तार से लिखिए।

प्रश्न 2. लोक संगीत का अर्थ एवं परिभाषा सहित हिमाचल प्रदेश के लोक गीत विषय पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 3. तीनताल और दादरा ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 4 भैरव और यमन राग के संक्षिप्त परिचय लिखें।

प्रश्न 5. पंडित सोमदत्त बट्टु, श्री हेतरं तंवर और श्री कश्मीरी लाल का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 6 नगाड़ा, रणसिंगा वाद्य यंत्र का परिचय लिखिए।

प्रश्न 7 करनाल और शहनाई वाद्य यंत्र का परिचय लिखिए।